संगीतकार बीथोवेन की कहानी

लेखक : जॉनसन, हिंदी : अपूर्वा भाटिया

संगीतकार बीथोवेन की कहानी

लेखक : जॉनसन, हिंदी : अपूर्वा भाटिया

एक समय की बात है...

बहुत समय पहले, जर्मनी देश के एक शहर बॉन में, एक छोटे बच्चे का जन्म बीथोवेन नाम के परिवार में हुआ।

"क्रिसमस का त्योहार बस आने ही वाला है," बच्चे की माँ ने उसे छाती से लगाते हुए कहा। "हमें कितना प्यारा तोहफा मिला है इस बार! कितना सुन्दर है यह।"

पर उस बच्चे के पिता, जोहान वैन बीथोवेन, इतने खुश नहीं थे। "मुझसे पूछो तो यह बहुत ही बदसूरत बच्चा है!", ऐसा कहते हुए जोहान अपने दोस्तों के पास शराबखाने चला गया।

"कोई बात नहीं," मर्या बच्चे के कान में फुसफुसाई। "मुझे लगता है की तुम बहुत ही प्यारे हो।"

उसी समय, जोहान के पिता जल्दी से कमरे में आये।

"वाह! वाह! बहुत ही अच्छा है," उन्होनें बहुत ख़ुशी के साथ कहा। "तुम मेरे शब्दें याद रखना मर्या। यह बच्चा बड़ा होकर ज़रूर एक बहुत ही मशहूर संगीतकार बनेगा।"

मर्या हँसी। "आपकी तरह?" उसने कहा। "और अपने पिता की तरह?"

दादा बीथोवेन तब काफी दुखी नज़र आए। उन्हें जोहान के बारे में ज़्यादा सोचना पसंद नहीं था। जोहान बहुत ही अच्छा संगीतकार बन सकता था पर वह अपना सारा समय गलत संगत और शराबखाने में बर्बाद करता था।

मर्या ने बच्चे का नाम उसके दादा के नाम पर रखा। यह नाम था लुडविग। जैसे-जैसे समय बीता, उसने लुडविग को हर वो चीज़ दी जो एक अच्छी माँ अपने बच्चे को देती है। उसने लुडविग को बहुत ही प्यार और ममता के साथ पाला।

जल्द ही मर्या को समझ में आया कि लुडविग बाकी बच्चों जैसा नहीं था। उसे ऐसी चीजें सुनाई देती थीं जिन पर बाकी बच्चे बिल्कुल ध्यान नहीं देते थें। जैसे ही चर्च की घंटियाँ बजती, लुडविग ख़ुशी से चहक उठता और तालियाँ बजाने लगता। बॉन शहर से निकलती हुई राइन नदी की गुनगुनाहट से भी लुडविग खुश हो जाता।

एक दिन जब मर्या घर के काम में खोई हुई थी, तो लुडविग ने देखा की घर का दरवाज़ा खुला था। उसने घर के बाहर निकल रही पतली पथरीली सड़क को देखा।

"न जाने इस सड़क के आखिर में क्या है?", लुडविग ने सोचा और वहाँ तक जाने का तय करा। वह घर से निकलकर सड़क पर चलने लगा और बहुत चलने के बाद वह एक खुले मैदान में पहुँच गया।

मैदान बहुत ही सुन्दर और शांत था। लुडविग एक मुलायम घास वाले स्थान पर बैठ गया और प्रकृति की धुनों को सुनने लगा। उसने पक्षियों को गाते हुए सुना। उसने हवा को पेड़ के पत्तों से टकराकर गुज़रते हुए सुना। उसने बहुत दूर खड़ी एक गाए के गले में बंधी घंटी की मधुर धीमी आवाज़ को भी सुना।

लुडविग बहुत ही छोटा था पर वह अभी से संगीत के बारे में बहुत कुछ जानता था। उसे लगता था की दुनिया का सारा संगीत कुदरत में मौजूद धुनों से ही शुरू हुआ होगा - हवा के पत्तों से टकराने का मधुर संगीत और पक्षियों के अलग-अलग सुरों के गीत।

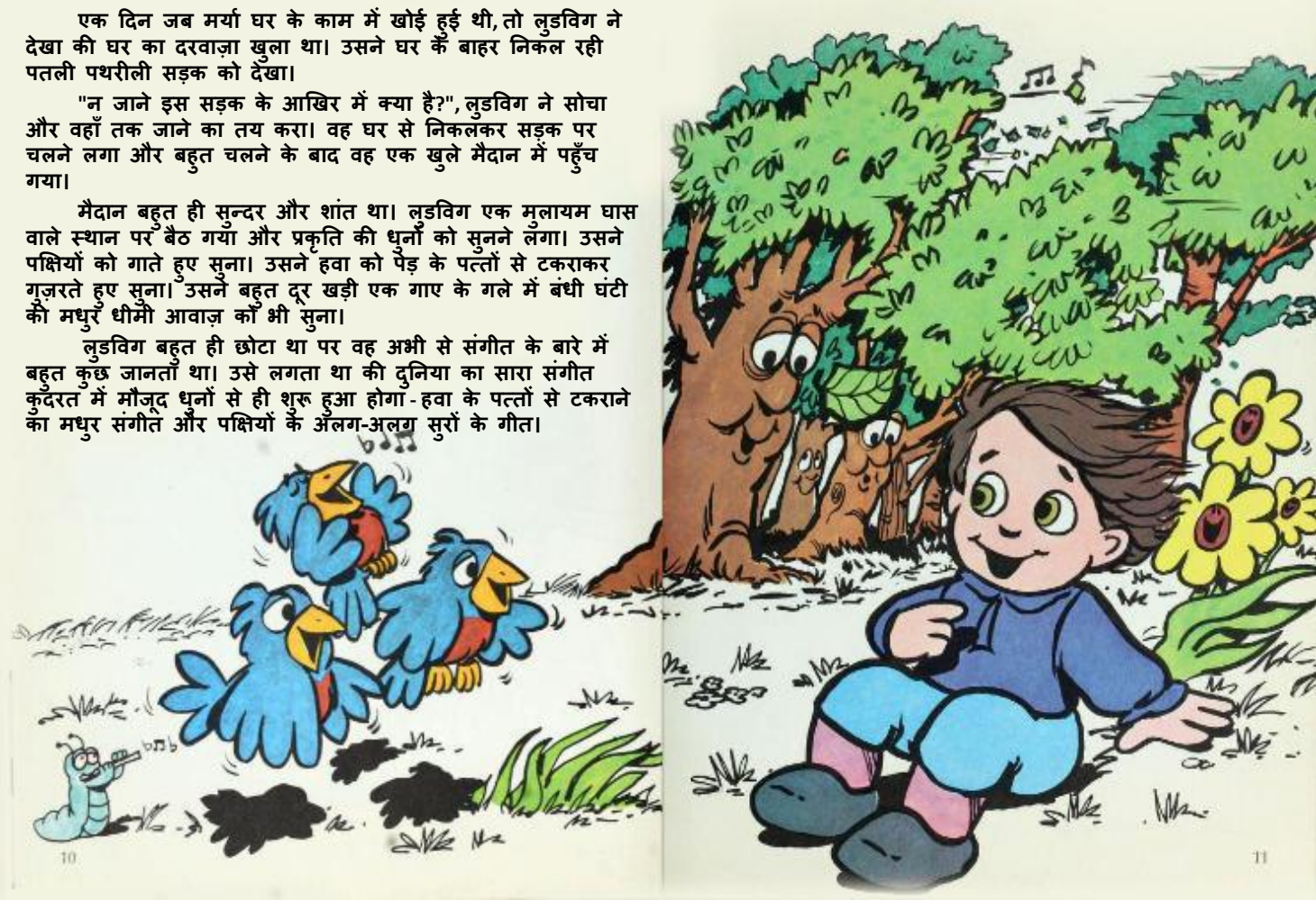

जहाँ उसे अपनी माँ से खूब प्यार मिलता, वहीं उसे अपने दादाजी के साथ कई मज़े से भरे यादगार पल मिलते। अपने दादा के साथ लुडविग बॉन शहर के नए-नए कोनों पर घूमने जाता। और एक ख़ास दिन तो दादाजी लुडविग को उस चर्च ले गए जहाँ मुख्य पादरी पूजा करते थे।

"यह तो बहुत सुन्दर है," लुडविग ने कहा।

"हाँ मुझे पता है," दादाजी ने जवाब दिया। "पर तुम्हें चुप रहना चाहिए। चर्च में बात करने की मनाई होती है।"

दादाजी फिर लुडविग के साथ एक जगह बैठ गए और फिर चर्च बहुत ही मधुर सुरों की आवाज़ से भर गया।

"दादाजी वो क्या है!", लुडविग फुसफुसाया।

"उसे मुखपत्र कहते है।", दादा ने जवाब दिया।

और तभी एक ऊँची मधुर धुन सुनाई दी।

"यह तुम्हारे पिता बजा रहे है," दादा बीथोवेन ने कहा। उनकी आवाज़ दुखी थी क्योंकि जब भी वह जोहान के बारे में सोचते तो उन्हें उसका शराबखाने में दोस्तों के संग समय व्यर्थ करना याद आता था। "वह एक बहुत ही अच्छा संगीतकार बन सकता है, अगर वह अपना समय इस तरह बर्बाद न करता तो।"

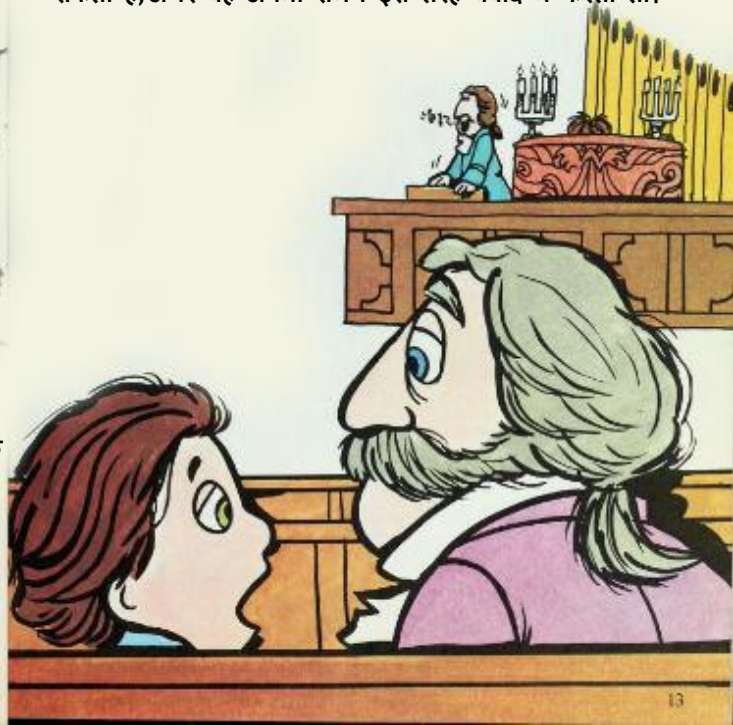

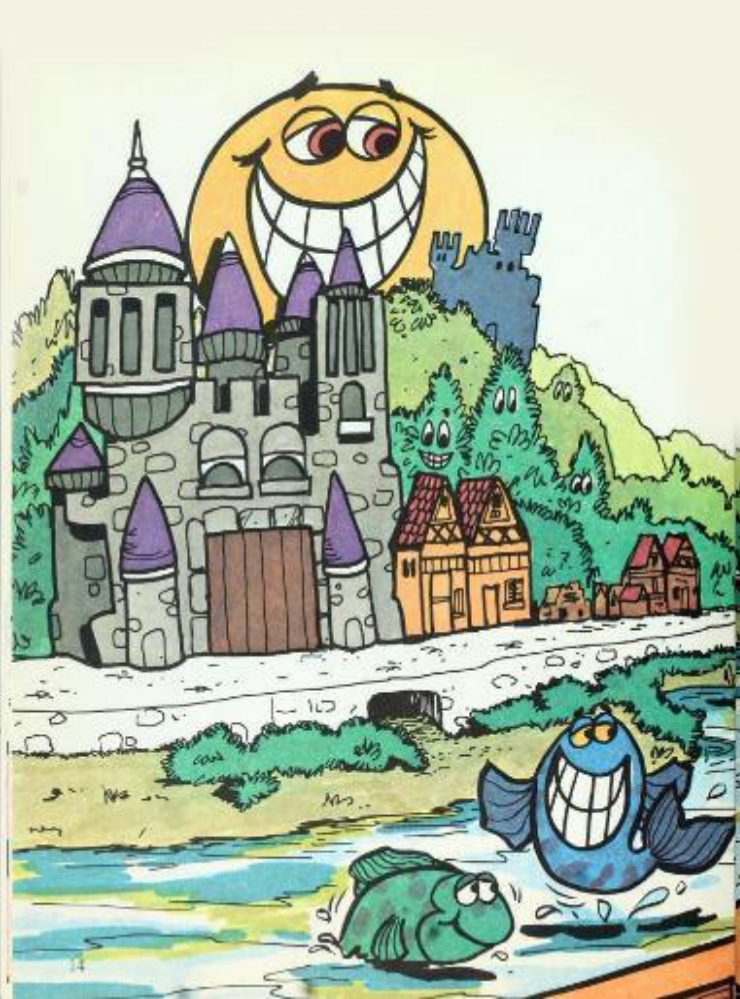

जैसे जैसे लुडविग बड़ा हुआ, वो और उसके दादाजी घूमने के लिए उसे बॉन शहर की गलियों से दूर जाने लगे। वह खेतों और पहाड़ों के बीच से गुज़रते और लम्बे समय तक सैर करते। वह प्रकृति और संगीत के बारे में खूब बातें करते। चलते-चलते जब वह थक जाते तो राइन नदी में नाव पर सफर करते।

"क्या हम हमेशा साथ रहेंगे?", लुडविग ने अपने दादाजी से पूछा। "क्या आप मुझे हमेशा इतनी सुन्दर जगह दिखाने और प्यारा संगीत सुनवाने के लिए अपने साथ ले जाया करेंगे?"

दादाजी ने कोई जवाब नहीं दिया, और जल्द ही ऐसा दिन आया जो लुडविग के लिए बाकी दिनों से बहुत ही अलग था।

लुडविग अकेले खेल रहा था जब उसे महसूस हुआ की उसके घर में काफी शांति है।

"कुछ तो हुआ है," लुडविग ने कहा। "माँ भी कहीं गयी हुई हैं और आज दादाजी भी मुझे सैर पर ले जाने के लिए नहीं आए। मैं उनके घर जाकर देखता हूँ। क्या पता माँ भी वहीं हों।"

और जब लुडविग दादाजी के घर पहुँचा, तो सच में उसकी माँ वहीं थी। उसके पिता भी वहीं थे और वह दोनों बहुत ही गंभीर थे।

"ओह मेरे छोटे से लुडविग," उसकी माँ ने उदासी के साथ कहा। उन्होनें लुडविग को बाहों में लेते हुए कहा, "तुम्हारे दादाजी अब नहीं रहे।"

उसके बाद, लुडविग बहुत ही अकेला हो गया। वह अब भी सैर पर जाता और पक्षियों का संगीत सुनता पर अब वो पहले जैसा नहीं रहा था।

"काश, दादाजी अभी भी यहीं होते," लुडविग ने सोचा। "या फिर मेरा कोई और दोस्त होता।"

एक दिन खूब बारिश के कारण लुडविग सैर पर नहीं जा पाया। वह घर में ही टहलता रहा और अचानक उसे एक अजीब सा बक्सा दिखा जो उसके पिता घर लाए थे।

"न जाने इसमें क्या है?" लुडविग ने सोचा।

उसने इधर-उधर देखा कि कहीं उसे कोई देख न रहा हो। फिर उसने बक्से का ढक्कन खोला और उसमें से एक छोटा सा बिल्ला बाहर कूदा, एक ऐसा बिल्ला जो बहुत ही हंसमुख और शरारती था। उसने लुडविग को कहा, "मेरा नाम बटन है, बिल्कुल वैसे बटन जैसे पियानो पर होते हैं या फिर जैसे इस संगीत वाले यंत्र में हैं।"

लुडविग बहुत खुश हुआ। जो उसने चाहा था वो उसे मिल गया - खेलने के लिए एक छोटा साथी। "मुझे पता है की तुम सच में हो नहीं और मैं मन-ही-मन कल्पना कर रहा हूँ, पर फिर भी मैं तुम्हें अपना दोस्त मानूंगा। मुझे एक दोस्त की जरूरत है," उसने बटन से कहा।

"हाँ, सच में तुम्हें ज़रूरत है," बटन ने उससे कहा। "पर वो सब छोड़ो। तुम इस यंत्र को क्यों नहीं बजाते?"

जब लुडविग ने उस यंत्र के बटनों को बजाना शुरू किया तब पूरा कमरा मधुर आवाज़ों से भर गया। "अरे वाह!", लुडविग ने कहा। "कितना अजब यंत्र है यह। इसे एक जगह से बजाओ तो पक्षियों जैसा कोमल संगीत बजता है, तो दूसरी जगह से बजाओ तो ऐसा जैसे बादल में बिजली कड़क रही हो।"

पर तभी लुडविग को पीछे से किसी की आवाज़ सुनाई दी। वह पीछे मुड़ा और डर के मारे कांपने लगा।

तुम्हे क्या लगता है वहाँ कौन था?

लुडविग के पिता दरवाज़े पर खड़े थे।

बेचारा लुडविग बहुत ही डर गया। "मुझे माफ़ कर दीजिये पिताजी," उसने कहा। "मैं समझ नहीं पा रहा था की यह बक्सा जिसे आप घर लाए थे, इसमें क्या होगा। जानने का बहुत मन किया और जब खोला तो यह सुन्दर यंत्र मिला। इसे जब बजाया तो इतना अच्छा लगा कि मैं खुद को रोक ही नहीं पाया।"

पहली बार, जोहान वैन बीथोवेन न ही चिल्लाये न ही उन्होंने डांटा। "इस यंत्र को कीबोर्ड कहते हैं," उन्होनें शान्ति से कहा और फिर बैठकर वह उस यंत्र को बजाने लगे।

लुडविग ने सुना। पहले तो उसे संगीत बहुत ही शांत लगा, फिर दूसरे ही पल जोशीला और उत्सुक करने वाला लगा। और कभी-कभी संगीत उसे उदास कर देता था।

जब जोहान ने बजाना बंद कर दिया, तो उन्होनें लुडविग से पूछा, "क्या तुम ऐसा संगीत बजाना सीखना चाहोगे?"

"क्या मैं सीख पाऊँगा?" लुडविग ने पूछा।

"हाँ क्यों नहीं," जोहान ने जवाब दिया। "मैं तुम्हें सिखाऊंगा।"

उस दिन लुडविग की माँ जब घर आयीं तो उन्होनें लुडविग को कीबोर्ड बजाते हुए देखा।

"देखो माँ! पिताजी मुझे संगीत बजाना सीखा रहे हैं," उसने बहुत ही आनंद के साथ माँ को बताया।

"यह तो बहुत बड़ी बात है," माँ ने आँखों में आंसुओं के साथ कहा। "जोहान, मुझे बहुत ही ख़ुशी है की तुम अपने बेटे के लिए समय निकाल रहे हो।"

जोहान मन-ही-मन मुस्कुराये। वह उस समय बहुत ही मशहूर संगीतकार मोज़ार्ट के बारे में सोच रहे थे। मोज़ार्ट सिर्फ नौ साल की उम्र में ही बहुत ही अच्छा पियानो बजाने लगा था और खुद से धुनें भी बना लेता था। "मोज़ार्ट बचपन में ही इतना अच्छा बजा लेता था। इससे उसने बहुत पैसे भी कमाए," जोहान ने सोचा। "मैं लुडविग को भी बचपन से ही संगीत सिखाकर बहुत मशहूर बना दूंगा। फिर लुडविग के ज़रिये मैं भी बहुत सारे पैसे कमाऊंगा।"

बेचारा लुडविग! उसके पिता एक ऐसे आदमी थे जो हमेशा खुद के बारे में ही सोचते थे। अपने फायदे के लिए उन्हें अपने बच्चे का इस्तेमाल करना भी ठीक लगा।

लुडविग बहुत जल्द ही सीख गया। जब-जब वह बजाता, तब-तब उसके पिता पैसों के सपने देखते। उन्होनें लुडविग को घंटों-घंटों तक संगीत बजाने को मजबूर किया।

"पिताजी, " लुडविग ने हारकर कहा। "मुझे संगीत से प्यार है पर मैं अभी थक गया हूँ। क्या मैं कुछ देर आराम कर लूँ?"

"तुम तभी आराम करोगे जब हम अमीर बन जाएँगे," जोहान चिल्लाये। "अभी तुम्हें अभ्यास करना है!" ऐसा कहते-कहते उन्होनें लुडविग के हाथों पर एक डंडा मारा।

"जोहान रुको!", मर्या रोई। "तुम उसे दर्द पहुंचा रहे हो।"

"यह एक बहुत बड़ा संगीतकार बनेगा," जोहान चिल्लाये। "यह खूब पैसा कमायेगा। चलो! अब बच्चों की तरह रोना बंद करो और काम पर लग जाओ लुडविग।"

इतने चीखने-चिल्लाने, गुस्से और थकान के बावजूद लुडविग को सच में संगीत से खूब प्यार था। जब उसके पिता घर पर नहीं होते, तो वह सिर्फ अपने और बटन के लिए बजाता था।

कुछ सालों में लुडविग के पिता उसे जितना संगीत सिखा सकते थे, वो लुडविग ने अच्छे से सीख लिया। उसने बॉन के कुछ अमीर परिवारों के घरों में बजाना भी शुरू किया। इससे उसे थोड़े-बहुत पैसे भी मिल जाते थे।

"यह काफी नहीं है," लुडविग ने बटन से कहा। "पर इससे मुझे औरों के सामने बजाने का मौका तो मिलता है। बस अगर पिताजी शराबखाने में सारे पैसा उड़ा न देते तो मैं माँ के लिए कुछ तोहफा लाता।"

लुडविग करीब दस साल का था जब एक दिन उसके पिता अपने एक दोस्त टोबियास के साथ घर आये। टोबियास एक समय में फ्रेंकफर्ट शहर का मशहूर संगीतकार था। पर वह भी बिल्कुल जोहान की तरह अब शराबखाने में ही अपना सारा समय बिताता था।

"उठो लुडविग!", जोहान चिल्लाये। "टोबियास तुम्हारा संगीत सुनने के लिए आया है।"

लुडविग के पिता जब ऐसे चिल्लाते तो वह उनसे बहस नहीं करता था। वह चुपचाप बिस्तर से निकलता, और उसके साथ बटन भी।

"बहुत अच्छे!", टोबियास ने कहा जब उसने लुडविग का संगीत सुना। "यह बच्चा सच में बहुत ही कुशल है। मैं इसे संगीत ज़रूर सिखाऊंगा।"

और फिर टोबियास लुडविग को सिखाने लगा। टोबियास जोहान से ज़्यादा अच्छा संगीतकार था और उससे बेहतर शिक्षक भी। पर वह सिखाने तभी आता जब शराबखाना बंद हो जाता था। फिर वह चिल्लाते हुए आता और तब जोहान, लुडविग को बिस्तर से निकलकर संगीत बजाने के लिए कहते।

"इतना परेशान मत हो लुडविग! बहादुर बनो," बटन ने कहा। "भूल जाओ की तुम्हें नींद आ रही है। बस संगीत के बारे में सोचो और सब ठीक हो जायेगा।"

जब जोहान लुडविग पर चिल्लाते, लुडविग की माँ रो पड़तीं। पर वह कुछ नहीं कर पातीं। वह अपने दो और लड़कों को भी लुडविग का मज़ाक उड़ाने से नहीं रोक पातीं। वो उसे बदसूरत कहकर चिढ़ाते थे।

"इनकी बातें मत सुनो लुडविग," बटन उसे समझाता। "सूरत से कोई फरक नहीं पड़ता। जब तुम एक मशहूर संगीतकार बन जाओगे, तो लोग बस तुम्हारे संगीत पर ही ध्यान देंगे।"

लुडविग, बटन की बात को सच मानने की कोशिश करता। और जल्द ही उसकी किस्मत ऐसे चमकी की उसे बटन की बात सच लगने लगी।

एक बहुत ही महान संगीतकार, जिनका नाम था क्रिस्चियन गोटलोब नीफे, ने लुडविग को बजाते हुए सुना और उसके संगीत से वो बहुत ही प्रभावित हुए। "तुम बहुत ही योग्य हो! पर अभी तुम्हें और बहुत कुछ सीखना है। मैं तुम्हें सिखाऊंगा। और फिर तुम खुद संगीत की रचना भी कर पाओगे।" उन्होनें लुडविग से कहा।

"मैंने कुछ कुछ धुनों की रचना तो की है," लुडविग ने क्रिस्चियन से कहा और फिर अपनी रचनायें बजाकर भी सुनाईं।

"वाह! बहुत ही अच्छे," क्रिस्चियन बोले। "समय के साथ तुम इससे भी अच्छा बजाने लगोगे।"

लुडविग बहुत ही खुश था, और उसके साथ बटन भी। लुडविग को बटन का साथ बहुत पसंद था इसलिए वह बटन को हमेशा अपने साथ रखता था - संगीत बजाते समय भी। अब वह अपने घर में कीबोर्ड पर नहीं बजाता था, बल्कि चर्च में ऑर्गन नाम के एक यंत्र को बजाता था। बटन उसके साथ ही था जब क्रिस्चियन यह बताने आये की लुडविग को उनके इलाके के शासक के सामने बजाने का मौका मिला है।

उन दिनों शासक किसी राजा या सम्राट जितने ज़रूरी व्यक्ति नहीं थे, पर फिर भी वह काफी महत्वपूर्ण माने जाते थे। जब लुडविग को पता चला की वह उनके सामने राजसभा में बजाने जाएगा तो उसकी ख़ुशी के ठिकाना नहीं था।

"माँ! मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा!", लुडविग ने कहा। "मुझे बड़ी घबराहट हो रही है।"

"तुम अच्छा ही बजाओगे," माँ ने समझाया। "मैं तुम्हें जानती हूँ। तुमसे कोई गलती नहीं होगी।"

लुडविग के पिता भी इस बात से बहुत खुश हुए। उन्हें लगा की आखिरकार अब लुडविग एक जाना-माना कलाकार बन जाएगा और खूब पैसे कमायेगा। इसलिए उन्होनें लुडविग को एक शानदार रेशम की पोशाक पहनवाकर उसे राजसभा भेजा।

लुडविग पहले बहुत ही चकित हुआ। उसके ऊपर जगमगाते हुए झूमर थे और चारों ओर दर्पणों की चमक! उसने सुन्दर-सुन्दर कपड़ों में बड़े-बड़े मशहूर लोगों को आते हुए देखा और उसके ठीक सामने राजसभा के बीचों-बीच उसके शहर के मुख्य-शासक अपनी गद्दी पर बैठे थे।

"अरे बटन!", वह फुसफुसाया। "मेरे तो पैर कांप रहे हैं! मुझे नहीं लगता कि मैं कीबोर्ड तक भी पहुँच पाऊँगा।"

"अरे ऐसा क्यों कह रहे हो," बटन बोला। "तुम सिर्फ संगीत के बारे में सोचो। संगीत के बारे में सोचने पर तुम से कभी कोई गलती नहीं होगी।"

लुडविग डरते-डरते कीबोर्ड तक पहुंचा और बैठ गया। उसके हाथ कांप रहे थे। पर जैसे ही उसने कीबोर्ड के बटनों को छुआ और संगीत की पहली धुन उसके कानों तक पहुंची, तब वह काफी अच्छा महसूस करने लगा। राजसभा का कीबोर्ड उसके घर के कीबोर्ड से कहीं बेहतर था। लुडविग, थोड़ी देर पहले के डर को बिलकुल भूल गया था। बटन सही था। लुडविग जब संगीत में खो जाता था तो वह वाकई दुनिया की हर फ़िक्र को भूल जाता था।

जैसे ही लुडविग ने बजाना बंद किया, पूरे कमरे में सन्नाटा छा गया। फिर एक साथ पूरे जोश के साथ सभी लोग उठे और खूब ज़ोर से तालियां बजाने लगे। "बहुत अच्छे! बहुत अच्छे!", सभी उल्लास के साथ चिल्लाए।

"तुमने कर दिखाया! ", बटन भी चिल्लाया। "आखिर तुमने कर दिखाया लुडविग। देखो मुख्य-शासक भी तालियां बजा रहे हैं।

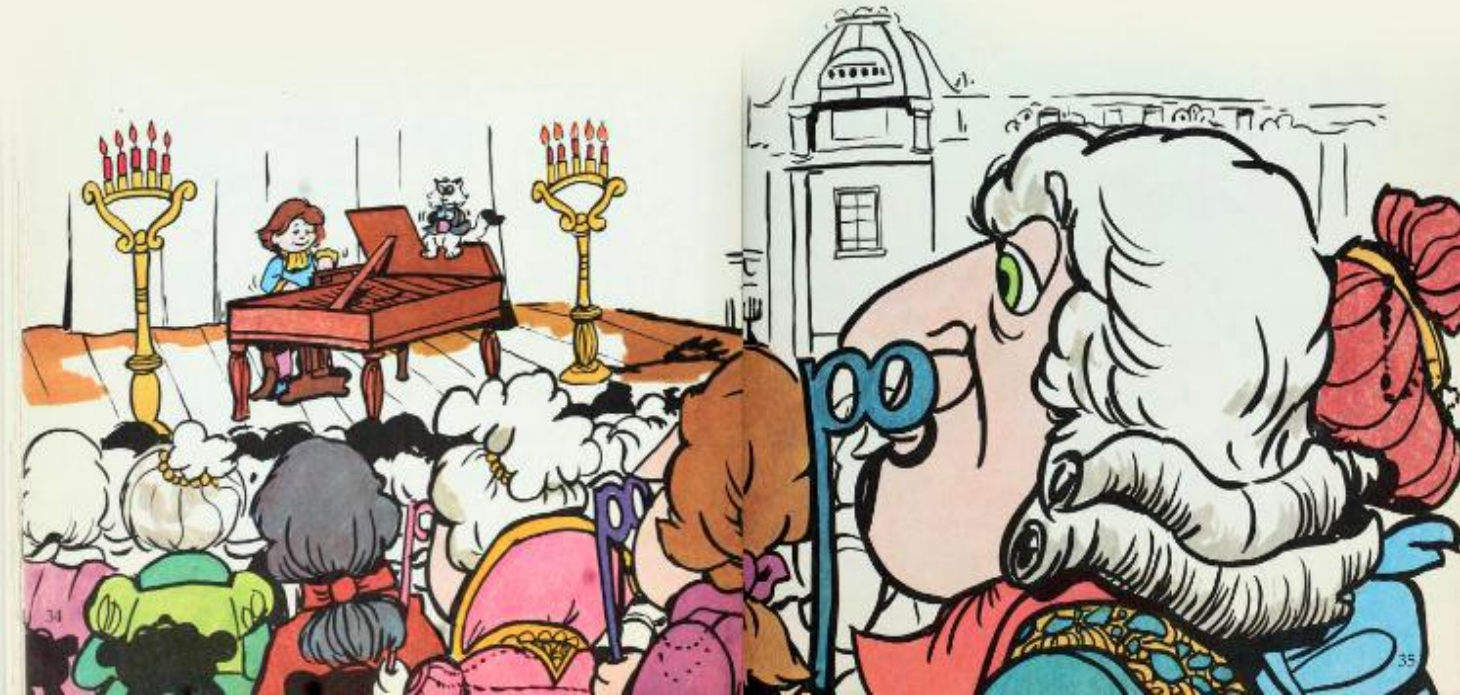

"कितना किस्मतवाला हूँ!", लुडविग ने उस अच्छे दिन के बाद बटन से कहा। "मुझे कितने अच्छे संगीतकारों ने सिखाया, और मुझे इतनी बड़ी जगह पर बजाने का मौका मिला।"

"ऐसे ही काम करते रहो," बटन ने कहा। "एक दिन तुम भी इन सब की मदद कर पाओगे।"

फिर लुडविग खूब मेहनत के साथ संगीत रचता और बजाता रहा। एक दिन क्रिस्चियन ने आकर उससे कहा कि अब से वह राजसभा के ऑर्केस्ट्रा में बजाया करेगा।

"ज़्यादा पैसे तो नहीं कमा पाओगे," क्रिस्चियन ने कहा। "पर राजसभा में बजाना बड़े ही सम्मान की बात होगी।"

"सम्मान!", जोहान चिल्लाये। "सम्मान किसे चाहिए। पैसा मिलना चाहिए। पैसा कमाना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।"

"पर यह कितना अच्छा मौका है," लुडविग ने पिता को समझाने की कोशिश करी।

"तुम जैसे बदसूरत लोगों को तो हर छोटी चीज़ एक मौका ही लगती है," उसके भाईयों ने उसको चिढ़ाया।

"इन सब की बात मत सुनो," लुडविग की माँ ने प्यार से समझाया। "तुम बदसूरत नहीं हो और राजसभा में बजा पाना वाकई एक बहुत अच्छा मौका है। तुम वहां ज़रूर बजाओगे। मुझे तुम पर बेहद गर्व है।"

लुडविग तब से राजसभा में बजाने लगा। जल्द ही उसे राजसभा के सभी कीबोर्ड बजाने वालों का मुखिया बनाया गया और उसे पैसे भी ज़्यादा मिलने लगे। पर लुडविग उम्र भर बॉन में नहीं रहना चाहता था - राजसभा के मुख्य संगीतकार की तरह भी नहीं!

"अभी भी इतना कुछ है जो मुझे नहीं आता है," लुडविग ने बटन से कहा। "मैं विएना शहर जाकर वहां के महान संगीतकारों से सीखना चाहता हूँ।"

फिर लुडविग ने पैसे जोड़ना शुरू किए। जब वह सत्रह वर्ष का था तब उसने अपने पैसों के साथ कुछ पैसे उधार भी लिए और फिर उसने विएना जाने के लिए माँ से विदा ली।

"अरे! अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है," लुडविग की माँ ने कहा। वह जानती थीं की उन्हें लुडविग की कमी बहुत ज़्यादा महसूस होगी पर वह लुडविग को इतना अच्छा मौका खोने नहीं देना चाहती थीं। इसलिए विएना जाने पर उन्होने लुडविग के सामने अपनी उदासी ज़ाहिर नहीं करी।

उनके इलाके के शासक ने, महान संगीतकार मोजार्ट के लिए लुडविग के हाथों एक चिट्ठी भी भेजी।

"हर किसी को मोजार्ट के सामने बजाने का मौका नहीं मिलता है," बटन ने कहा। यह ज़ाहिर सी बात है की बटन भी लुडविग के साथ विएना गया।

"मैं बहुत ही किस्मत वाला आदमी हूँ!" लुडविग ने कहा। "और बहुत बेचैन भी।"

लुडविग मोज़ार्ट के पास पहुंचा और उसने उन्हें वो चिट्ठी दी। "बहुत अच्छे!", मोज़ार्ट ने कहा। "ज़रा मैं भी सुनूं तुम्हारा संगीत, जिसकी शासक ने इतनी तारीफ की है।"

लुडविग पियानो के सामने बैठा और बजाना शुरू किया। और बिल्कुल राजसभा में बजाने की तरह, इस बार भी जैसे ही उसने बजाना शुरू किया, उसकी सारी बेचैनी ख़तम हो गयी।

"तुम काफी अच्छा बजाते हो," मोज़ार्ट ने लुडविग का संगीत सुनने के बाद कहा। "मैं चाहता हूँ की तुम विएना में रुको और मुझसे संगीत सीखो।"

मोज़ार्ट ने लुडविग को न सिर्फ संगीत सिखाया पर इस बात का भी ध्यान रखा की वह शहर के सभी संगीतकारों से मिले। लुडविग को नए-नए संगीतकारों से मिलकर और उनका संगीत सुनकर बहुत ही अच्छा लगा।

"एक दिन मैं माँ को भी विएना लाऊंगा," लुडविग ने बटन से कहा। "मैं उन्हें यहाँ की सभी खूबसूरत जगह दिखाऊंगा और संगीतकारों का मधुर संगीत सुनवाऊँगा। उन्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें भी तोहफे में दूंगा।"

"तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए," बटन ने कहा। "उन्होनें तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है। तुम्हारा भी फ़र्ज़ बनता है।"

पर लुडविग अपनी माँ के साथ विएना में यादगार समय बिताने के सपने ही देख रहा था कि तभी उसके घर से एक चिट्ठी आयी। जैसे ही लुडविग ने वो चिट्ठी पढ़ी, वह बहुत उदास हो गया।

"माँ बहुत बीमार है," उसने बटन से कहा। "मुझे तुरंत घर जाना होगा।"

लुडविग जल्दी से बॉन शहर पहुंचा। पहुँचने के कुछ दिनों बाद ही लुडविग की माँ की मृत्यु हो गयी।

अब, उसकी ज़िन्दगी में पहली बार संगीत भी उसका दुःख दूर नहीं कर पाया। उसके परिवार में सिर्फ उसकी माँ ही थी जिन्होनें उसे इतना प्यार दिया था, और अब वह जा चुकी थीं। लुडविग हर दिन संगीत का अभ्यास करने चर्च जाता, पर अब उसमें पहले जैसी जान नहीं थी। वो ऐसे चलता था, मानों नींद में चल रहा हो। चर्च के रास्ते में एक हरा भरा बगीचा था। कई बार लुडविग और बटन वहां पर बैठकर माँ के बारे में सोचते थे।

ऐसे ही एक दिन लुडविग बगीचे में बैठा था कि कहीं से एक कोमल से आवाज़ आई, "सब ठीक तो है न?"

लुडविग मुड़ा तो उसने एक औरत को बगीचे में खड़े हुए देखा।

"तुम बहुत उदास लग रहे हो," उसने लुडविग से कहा। "मेरा नाम फ्रॉ वॉन ब्रूनिंग है और यह मेरा बगीचा है। बताओ तुम्हें किस बात का दुःख है?"

वह औरत बहुत ही दयालु थी। लुडविग ने उसे अपनी माँ के बारे में बताया।

"मैं तुम्हारा दुःख समझ सकती हूँ," फ्रॉ ने कहा। "कुछ समय पहले मेरे पति की भी मृत्यु हो गयी और मुझे भी इसी तरह बहुत दुःख हुआ। तुम अंदर आकर मेरे बच्चों से क्यों नहीं मिलते? साथ ही हमारे साथ कुछ खा भी लेना।"

लुडविग खुश था की उसे लौटकर अपने दुखी घर वापिस नहीं जाना पड़ा जहाँ सब उसे नापसंद करते थे। उसे फ्रॉ के चार बच्चों से मिलकर भी अच्छा लगा और यह भी महसूस हुआ की बच्चे भी उसकी संगत को पसंद कर रहे थे। "आओ लुडविग," उन सबने चिल्लाते हुए उसे खाने के कमरे में आमंत्रित किया।

"कितने अच्छे लोग हैं!", बटन ने उन्हें ख़ुशी से हँसते-खाते देखकर सोचा।

जब से लुडविग विएना से वापिस आया था तब से वह इतना खुश कभी नहीं हुआ था। और जब फ्रॉ को पता चला की वह एक संगीतकार है तो उसने उसे बच्चों के लिए कुछ बजाने को कहा।

लुडविग ने बजाया, और इतने महीनों के बाद आखिरकार उस दिन उसे संगीत बजाकर अच्छा लगा।

"शुक्र है!" बटन ने कहा। "अब लुडविग वापिस पहले जैसा हो गया है।"

"कितना खूबसूरत संगीत है!" फ्रॉ ने कहा। उनकी और उनके बच्चों की लुडविग के साथ बहुत अच्छी दोस्ती हो गयी - एक ऐसी दोस्ती जो ज़िन्दगी भर बनी रही।

फ्रॉ और उसके बच्चों के साथ गुज़ारी हुई उस शाम के बाद लुडविग को एक नया जोश मिला। उसने नए उत्साह और प्रेरणा के साथ संगीत रचना शुरू किया। और इसके कुछ दिनों बाद उसकी मुलाकात काउंट वॉन वॉल्डस्टाईन नाम के एक व्यक्ति से हुई।

काउंट एक बहुत ही अमीर व्यक्ति था और उसे संगीत का भी शौंक था। वह लुडविग के संगीत से बहुत ही प्रभावित हुआ। एक दिन उसने तय किया की वह लुडविग को बिना बताये उसके घर अचानक से जायेगा।

काउंट को लुडविग के घर जाकर काफी झटका लगा। उन्होनें देखा की लुडविग एक छोटी सी गली में एक बहुत ही गंदे घर में रह रहा था। उसका कमरा बिल्कुल भी साफ़ नहीं था और वहां बहुत अँधेरा भी था। फर्श पर हर तरफ संगीत से जुड़े कागज़ बिखरे पड़े थे। कमरे के एक कोने में एक पुराना टूटा-फूटा सा पियानो पड़ा था और लुडविग उसपर झुककर अपनी नई रचना पर काम कर रहा था।

"कितने शर्म की बात है," काउंट ने कहा। "लुडविग वैन बीथोवेन एक बहुत ही महान संगीतकार है। उसे ऐसा पुराना टूटा हुआ यंत्र नहीं बजाना चाहिए।"

लुडविग ने सर उठाकर ऊपर देखा और फिर उसकी नज़र काउंट पर पड़ी। वह झटके से काउंट के पैर छूने गया और उसने उनसे बैठने के लिए कहा। लुडविग ने यह जताने की कोशिश की की उसके घर पर सब ठीक-ठाक था पर अंदर से वह बहुत ही शर्मिंदगी महसूस कर रहा था।

"शुक्र है हमारे घर पर ज़्यादा मेहमान नहीं आते। यह घर तो बहुत ही गन्दा पड़ा है," बटन ने कहा।

कुछ दिनों बाद दो हट्टे-कट्टे आदमी लुडविग के घर एक नया चमकता हुआ सुन्दर पियानो लेकर आये।

"मेरे लिए?", लुडविग ने हैरान होकर पूछा। वह इतना सुन्दर पियानो देखकर काफी भौचक्का हुआ। "कोई गलती की है आप लोगों ने। मैंने कोई पियानो नहीं मंगवाया है, न ही मेरे पास उसे खरीदने के लिए पैसे हैं।"

"यह एक तोहफा है," उनमें से एक आदमी बोला। "आपके लिए काउंट वैन वॉल्डस्टाईन ने इसे ख़ासतौर पर भेजा है।"

लुडविग बहुत ही खुश हुआ। उसको यह भी पता चला कि आगे चल कर उसे और भी कई तोहफे मिलेंगे। काउंट और शासक दोनों ही इस बात का ख्याल रखने वाले थे।

फ्रांज़ जोसफ हेडेन, नाम के एक बहुत ही जाने-माने संगीतकार, शासक के पास आये थे। लुडविग को हेडेन के सामने बजाने का मौका मिला। फिर जब हेडेन ने लुडविग को उनसे विएना आकर संगीत सीखने के लिए कहा, तो काउंट ने लुडविग को विएना भेजने की तैयारी की ताकि वो अच्छे से संगीत सीख पाए। उसने लुडविग को वहां पर एक आराम का जीवन जीने के लिए पैसे भी दिए।

लुडविग ने विएना पहुँचते ही हेडेन से संगीत सीखना शुरू कर दिया। जल्द ही अन्य संगीतकारों को भी लुडविग के बारे में पता चला और वह सब भी उसे संगीत सिखाने आने लगे।

"मुझ पर कितने लोगों की दया है," लुडविग ने सोचा। "मुझे कम-से-कम उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्हें ज़रूरत है।" इसलिए जब भी संभव होता, लुडविग बॉन में अपने पिता और भाईयों को पैसे भेजा करता।

जल्द ही लुडविग पैसों से अलावा कुछ और भी बांटने लगा था। वह बहुत सारे लोगों को अपने संगीत के ज़रिये आनंद और प्रसन्ता बांटता था। लोग दूर-दूर से उसका संगीत सुनने आते थे।

"बहुत अच्छे!", वह सब चिल्लाते। "बहुत अच्छे! और बजाओ! ऐसे ही बजाते रहो।"

पर तभी, जब सब कुछ इतना अच्छा चल रहा था, एक बहुत ही बुरी घटना हुई।

वह बहुत धीरे-धीरे हुआ। शुरू में तो बीथोवेन को पूरा यकीन भी नहीं हुआ। "यह शायद मेरी कल्पना ही है पर मुझे लगता है की मैं ठीक से सुन नहीं पा रहा हूँ," उसने एक दिन बटन से कहा।

"सुन नहीं पा रहे?", बटन घबराया। "यह अच्छी बात नहीं है। तुम्हें किसी डॉक्टर के पास जाना चाहिए।"

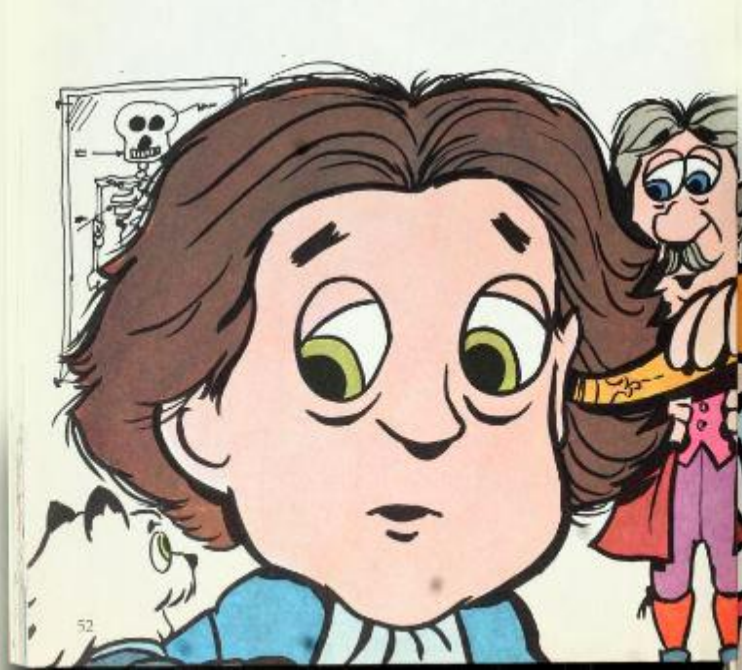

लुडविग एक डॉक्टर के पास गया। और फिर वह कई डॉक्टरों के पास गया। पर हर कोई उससे निराश होकर कहता, "हम कुछ नहीं कर पाएंगे बीथोवेन। समय के साथ तुम्हारी सुनने की शक्ति पूरी तरह से चली जाएगी।"

"बटन अब मेरा क्या होगा?" बीथोवेन रोया। "मैं अभी सिर्फ 30 साल का हूँ और मैंने अभी ही तो काम करना शुरू किया है। अब मैं क्या करूँ?"

बेचारे बटन के पास कोई जवाब न था। हर दिन बीथोवेन की हालत खराब होती जाती। आखिरकार एक दिन वह कुछ भी नहीं सुन पा रहा था – वो पूरी तरह बहरा हो गया था। सिर्फ बटन ही था जिसकी आवाज़ बीथोवेन तक पहुँच पा रही थी वो भी इसलिए क्योंकि बटन असल में उसकी कल्पना ही थी।

"कोशिश करते रहो," बटन कहता। "तुम कोशिश करते रहो।"

पर लुडविग के लिए यह काफी मुश्किल समय था। वह अपना जीवन संगीत के बिना सोच भी नहीं सकता था। वह बहुत ही निराश हो गया। उसने अपने घर से बाहर जाना बंद कर दिया और अपने दोस्तों से मिलना भी।

"अब बस भी करो!", बटन ने उससे कहा। "क्या तुम अपना पूरा जीवन ऐसे निराश होकर बिताओगे? तुम्हारे सफर में इतने सारे लोगों ने तुम्हारी मदद की है। शायद अब वक़्त आ गया है उन लोगों के लिए कुछ करने का।"

फिर लुडविग ने उन सब लोगों को याद किया जिन्होनें उसे इस मुकाम तक पहुँचाया था। उसने अपनी माँ और दादाजी के अनंत प्यार को याद किया। उसने टोबियास और क्रिस्चियन के साथ बिताये हुए समय को याद किया जब वह उसे संगीत सिखाते थे। "और शासक ने भी तो मेरी कितनी मदद की।", लुडविग ने बटन को कहा। "और फ्रॉ, और मोज़ार्ट और हेडेन और काउंट। तुम सही कहते हो! इन सब ने ही मुझे कितना कुछ दिया है। मैं इस सब को ऐसे ही बेकार नहीं जाने दे सकता।"

जल्द ही लुडविग के दोस्तों को खबर मिली की उसने फिर से संगीत रचना शुरू कर दी है।

"मैं कर सकता हूँ!", लुडविग ने बटन से कहा। "मैं संगीत को अपने मन में सुन सकता हूँ और मुझे लग रहा है की मैं अच्छा बजा रहा हूँ।"

"मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था," बटन ख़ुशी से बोला। "यह अब तक की तुम्हारी सभी रचनाओं में से सबसे अच्छी है।"

कई लोगों ने कहा कि जो संगीत बीथोवेन ने बहरे होने के बाद रचा, वह दुनिया का सबसे खूबसूरत और मधुर संगीत था।

"तुम्हें अब खुश होना चाहिए," बटन ने कहा। "तुम दुनिया के लिए कितना सुन्दर संगीत रच रहे हो।"

"हाँ, यह निराश होने से तो वकाई में ज़्यादा बेहतर है," बीथोवेन ने बटन से कहा। "पर एक काम है जो मैं करना चाहता हूँ पर मुझे पता नहीं की मैं वो कर पाऊँगा या नहीं। मैं ऑर्केस्ट्रा में अपनी नौंवी रचना पेश करना चाहता हूँ।"

लोग यह बात सुनकर काफी अचम्भे में आए। और उन्होनें लुडविग का कुछ ख़ास साथ भी नहीं दिया। " अगर तुम्हें संगीत ही नहीं सुनाई देता, तो फिर तुम ऑर्केस्ट्रा कैसे संचालित कर सकते हो?" उसके एक दोस्त ने पूछा। "तुम इस बात को भूल ही जाओ।"

"इनकी बातों पर ध्यान मत दो लुडविग," बटन फुसफुसाया। "बहुत लोग तो यह भी सोचते थे की बहरे होने के बाद तुम संगीत रच नहीं पाओगे, पर तुमने तो वो भी कर लिया।"

"हाँ मैंने कर लिया था!", लुडविग बोला। "अब मैं ऑर्केस्ट्रा भी रचूंगा।"

पर जब लुडविग ऑर्केस्ट्रा के सामने खड़ा हुआ तो सभी संगीतकार बहुत ही घबराये हुए थे।

उन्होनें लुडविग के इशारे पर संगीत बजाना शुरू किया। उन सभी की आँखें सारा समय लुडविग पर ही थीं। और लुडविग को अपने मन में सारा संगीत इतने अच्छे से सुनाई दे रहा था कि उसे ऑर्केस्ट्रा संचालित कराने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

इसी तरह संगीत का सिलसिला चलता रहा। लुडविग को हर एक सुर का ध्यान था। उस ऑर्केस्ट्रा के लोग, संगीत का इतना मधुर और शानदार प्रदर्शन कर रहे थे मानों कोई बहुत ही खूबसूरत यंत्र राग-से-राग मिलाते बज रहा हो। उस पल लुडविग के लिए सिर्फ उसका संगीत ही सब कुछ था। और फिर प्रदर्शन समाप्त हुआ।

लुडविग ऑर्केस्ट्रा के संगीतकारों की तरफ मुँह करे एकदम स्थिर खड़ा था। अब जब संगीत नहीं बज रहा था, तो उसके लिए सब कुछ खामोश था। पर फिर एक संगीतकार उसके पास आया और उसे प्यार से सभी दर्शकों की तरफ घुमाया। उसने देखा की सभी दर्शक खड़े थे और तालियां बजा रहे थे। उसने ध्यान दिया कि कुछ लोग खूब उल्लास से चिल्ला रहे थे तो कुछ की आँखों में ख़ुशी के आंसू थे।

"तुमने बहुत ही बढ़िया प्रदर्शन किया," बटन ने उससे कहा। "तुमने दुनिया को एक ऐसी चीज़ दी है जो हमेशा ही जीवित रहेगी।"

बटन ने बिल्कुल सही कहा था। दुनिया में आज भी बीथोवेन का संगीत उतने ही शौंक से सुना जाता है जितना तब सुना जाता था।

इस बात में कोई शक नहीं की हर कोई दुनिया को वैसा संगीत नहीं दे सकता जैसा बीथोवेन ने दिया था। पर आज नहीं तो कल, सभी के पास किसी और को कुछ देने का, किसी और के लिए कुछ करने का मौका ज़रूर आता है। तुम जो किसी के लिए करो ज़रूरी नहीं की वो कोई बहुत बड़ी चीज़ हो, पर अगर वह किसी और को ख़ुशी पहुँचाती है तो वह तुम्हें उससे ज़्यादा ख़ुशी पहुंचाएगी।

अगर कोई तुम्हें कुछ दे - चाहे वह उनका कीमती समय हो, या फिर पैसा या फिर उनका साथ - उसको ख़ुशी और आदर के साथ स्वीकार करने की कोशिश करो। इससे देने वाले को भी मज़ा आएगा और तुम्हें भी।

ऐतिहासिक तथ्य

लुडविग वैन बीथोवेन का जन्म 16 दिसंबर 1770 को जर्मनी के बॉन शहर में एक संगीतकारों के परिवार में हुआ। उसके दादाजी राजसभा के ऑर्केस्ट्रा के प्रमुख थे और उसके पिता शाही संगीतकारों के समूह में गायक थे। बीथोवेन बहुत ही गरीबी में पला बड़ा, ख़ासकर इसलिए क्योंकि उसके पिता को काम करने से ज़्यादा शराब पीने का शौक था।

अपने बचपन में बीथोवेन अपना ज़्यादातर समय घर से बाहर ही बिताता था और इस कारण वह प्रकृति के काफी करीब था। प्रकृति की तरफ उसका शौंक उम्र भर रहा। उसको पेड़ों से टकराती हवा की आवाज़ें, पक्षियों के चहकने और नदी के बहने की आवाज़ों से बेहद प्रेरणा मिलती थी। वह मानता था की दुनिया में संगीत का असली स्रोत प्रकृति ही है।

उसने संगीत चार साल की उम्र में सीखना शुरू किया। जब उसके पिता, जोहान, को उसके हुनर का पता चला, तो उन्होने चाहा की लुडवग इस हुनर का इस्तेमाल करके खूब पैसा कमाए। लुडविग को जल्दी से सबकुछ सिखाने के लिए वह उसे घंटो-घंटो तक अभ्यास करने की लिए मजबूर करते और उस पर हाथ भी उठाते। एक दिन लुडविग की माँ, मर्या, ने उन्हें ऐसा व्यवहार बंद करने को कहा तो जोहान ने उन्हें भी बहुत पीटा। यह सब देखकर लुडविग ने संगीत जल्द-से-जल्द सीखने की ठान ली, ताकि वह अपनी माँ की मदद कर पाए और संगीत से कमाए हुए पैसे से उन्हें दुनिया की हर ख़ुशी दिलाये।

जल्द ही लुडविग संगीत की रचना भी करना सीख गया। 1782 तक उसकी बहुत सारी रचनाएं प्रकाशित भी हो गयीं। 1787 में वह विएना जाकर मोजार्ट से भी मिला। उसका संगीत सुनकर, मोज़ार्ट ने अपने दोस्तों से कहा, "इस पर ध्यान रखना। एक दिन यह पूरी दुनिया को चकित कर देगा।" मोज़ार्ट की कही हुई बात वाकई में सच साबित हुई।

बीथोवेन को संगीत की दुनिया के महान गुरुओं के साथ संगीत सीखने का मौका मिला। लेकिन हर जगह ही उसे संगीत के पुराने उसूलों और नियमों का पालन करना सिखाया गया। यह उसे एक बंदिश लगती थी। वह और आज़ाद तरीके से अट्ठारवीं शताब्दी के पारम्पारिक अंदाज़ से हटकर कुछ बजाना चाहता था। जब तक बीथोवेन ने अपना तीसरा ऑर्केस्ट्रा रचा, दुनिया उसे एक सच्चे रचयिता के रूप में जान चुकी थी।

1798 में बीथोवेन के सुनने की शक्ति कम होने लगी। इस कारण, आने वाले कुछ सालों तक बीथोवेन बहुत ही निराशा भरी ज़िन्दगी जीने लगा। पर उसने संगीत की रचना करना नहीं छोड़ी। अपने जीवन में उसने कुल नौं ऑर्केस्ट्रा, पांच पियानो कॉनसर्ट, 32 पियानो सोनाटा, एक ओपेरा और कई सारी और ऐसी रचनाएं रचीं जो दुनिया को बेहद पसंद आईं।

उसने नौंवा ऑर्केस्ट्रा 1823 में रचा - तब वह पूरी तरह से बहरा हो चुका था। फिर भी उसने जनता के बीच उस रचना का प्रदर्शन किया। ऑर्केस्ट्रा ख़त्म होने पर एक संगीतकार उनकी तरफ आये और उन्हें दर्शकों की तरफ मुँह करने को कहा। उन्होनें सभी दर्शकों को तालिया बजाते हुए देखा। उन्होनें सब से मुस्कुराते हुए कहा, "मैं आप सब के लिए नहीं रचता, बल्कि उनके लिए रचता हूँ जिनका हम सब के बाद जन्म होगा।"

इसके तीन साल बाद 26 मार्च 1827 को, उसकी निमोनिया से मृत्यु हो गयी। पर वह दुनिया के लिए अपना मधुर और बेहद शानदार संगीत छोड़ गया, ऐसा संगीत जो हम आज भी बड़े चाव से सुनते हैं।